प्रथम स्थान

सीनियर वर्ग (I)

हिन्दी लेखन प्रतियोगिता

हिन्दी लेखन प्रतियोगिता

द्वितीय चरण (2023)

नामक	पूर्णांक	प्राप्तांक
वर्णों का आकार	04	3.5
गति	04	3.5
विराम चिन्हों का प्रयोग	04	3.5
शुद्ध लेखन	04	3.5
सम्पूर्ण कार्य शैली	04	3
पूर्णांक	20	17

अ० ह०

नाम - शिवांगी राठौर
कक्षा - 12 'अ'
अनु - 06
सदन - ओम
दिनांक - 09-06-23

Dt.
Pg.

साहित्य का स्वरूप कैसा होना चाहिए, इस बात को लेकर पाश्चात्य एवं भारतीय आचार्यों ने काव्यशास्त्रीय दृष्टि से अनेक विचार व्यक्त किये हैं। स्थूल रूप से गद्य-पद्यात्मक समस्त रचनाओं को साहित्य के अन्तर्गत माना जाता है। इसके भी दो रूप होते हैं। उपयोगी साहित्य और ललित साहित्य। उपयोगी साहित्य तो उक्त परिभाषा में सम्मीलित हो जाता है, परन्तु ललित साहित्य के लिए इतना जोड़ा जा सकता है कि मनुष्य के अनुभवों और विचारों की भावात्मक अभिव्यक्ति साहित्य है। यह भावात्मक अभिव्यक्ति शब्दबद्ध होकर साहित्य को शक्ति प्रदान करती है, जिसके कारण एक व्यक्ति के अनुभव सार्वजनिक बन जाते हैं और सभी को प्रभावित करने में समर्थ रहते हैं। साहित्य रचना का उद्देश्य मानव समाज का हित-चिन्तन करना तथा उसकी चेतना का पोषण करना है।

इससे यह सिद्ध होता है कि साहित्य लोक-संग्रह के कारण ही उपयोगी माना जाता है। यदि कोई रचना समाज के लिए उपयोगी नहीं है, तो वह साहित्य की श्रेणी में नहीं आ सकती। वैसे भी बिना उद्देश्य एवं उपयोगिता के रचा गया साहित्य मात्र कूड़ा-कचरा है जो रद्दी के ढेर में विलीन हो जाता है, लेकिन उपयोगी साहित्य अमर बन जाता है। इसलिए साहित्य की कसौटी उपयोगिता ही है, मानव-समाज के लिए साहित्य की उपयोगिता इसलिए भी है कि वह मानव की जिज्ञासा-वृत्ति को शान्त करता है, ज्ञान की पिपासा को तृप्त करता है, मास्तिष्क का पोषण करता है।

जिस प्रकार पेट की भूख को शान्त करने के लिए भोजन आवश्यक है, उसी प्रकार मास्तिष्क की क्षुधा को मिटाने के लिए साहित्य आवश्यक एवं उपयोगी है। साहित्य के द्वारा मानव-चेतना का प्रसार होने से उसमें शीतत्व की स्थापना होती है। हम अपने राष्ट्रीय

WOW!

Dt.
Pg.

इतिहास से अपने देश की गरिमा, अपनी सभ्यता एवं संस्कृति और अपने परम्परागत रीति-रिवाजों, आदर्शों एवं विचारों से परिचित होते हैं, हमें अपने साहित्य का अनुशीलन करने से पता चलता है कि शताब्दियों पूर्व हमारे देश में कैसा आचार-विचार था, किस प्रादेशिक भाग में कौनसी भाषा बोली जाती थी, कौनसी वेश-भूषा थी, धार्मिक तथा आर्थिक दशा कैसी थी और सामाजिक जीवन किस तरह चल रहा था, इन सब बातों का ज्ञान हमें साहित्य के द्वारा होता है।

श्रमदान भारत के लिए कोई भी नई वस्तु नहीं है, यह भावना हमारे देश में बहुत पहले से ही विद्यमान थी, जिस प्रकार हम किसी अभावग्रस्त व्यक्ति को भोजन-वस्त्रादि का दान करते हैं, उसी प्रकार श्रमदान में श्रम से प्राप्त लाभांश किसी व्यक्ति अथवा समाज को दिया जाता है। परन्तु श्रमदान का यह अर्थ संकीर्ण है, विस्तृत अर्थ में यह शब्द एकदम नया है, इस शब्द का प्रचलन विनोबा भावे के भूदान के साथ हुआ है जिसका मुख्य आधार "दानं संविभागः" है, अर्थात् जिनके पास अधिक धन या श्रम है, वे अभावग्रस्त लोगों को अपने पास से कुछ धन या श्रम दें। इस प्रकार के दान एवं समाज विभाग में कर्तव्य एवं जन-कल्याण की भावना निहित है। ऐसे दान में दान लेने वाले के प्रति तुच्छता की भावना तथा दान देने वाले के लिए; बड़प्पन की भावना नहीं रहती है, न दान देने और लेने वालों के मन में ऐसी भावना जागती है।

समाज में दान के अनेक रूप प्रचलित है। उदाहरण के लिए सम्पत्ति दान, विद्यादान, भोजनदान,

10-6-23

सभा

WOW!

09/जून/2023

सीनियर वर्ग
द्वितीय स्थान
हिन्दी लेखन प्रतियोगिता

RANKA
DATE / /
PAGE

अंतिम चरण सुलेख प्रतियोगिता

2023 - 24

क्र. सं.	मूल्यांकन के आधार बिन्दु	अंक	प्राप्तांक
1 →	अक्षरों की बनावट	4	2.5
2 →	कार्य शैली / स्पष्टता	4	3.0
3 →	गति	4	3.0
4 →	शुद्धता	4	04
5 →	विराम चिह्न का प्रयोग	4	03
	पूर्णांक	20	15.5

नाम → पल्लवी शाह
कक्षा → 12 'ब'
सदन → पंचाचूली

6 जून 23

साहित्य का स्वरूप कैसा होना चाहिए, इस बात को लेकर पाश्चात्य एवं भारतीय आचार्यों ने काव्यशास्त्रीय दृष्टि के अनेक विचार व्यक्त किए हैं, स्थूल रूप से गद्य-पद्यात्मक समस्त रचनाओं को साहित्य के अन्तर्गत माना जाता है। इसके भी दो रूप होते हैं उपयोगी साहित्य और ललित साहित्य। उपयोगी साहित्य तो उक्त परिभाषा में सम्मिलित हो जाता है, परन्तु ललित साहित्य के लिए इतना जोड़ा जा सकता है कि मनुष्य के अनुभवों और विचारों की भावात्मक अभिव्यक्ति साहित्य है। यह भावात्मक अभिव्यक्ति शब्दबद्ध होकर साहित्य को शक्ति प्रदान करती है, जिसके कारण एक व्यक्ति के अनुभव सार्वजनिक बन जाते हैं और सभी को प्रभावित करने में समर्थ रहते हैं।

इससे यह सिद्ध होता है कि साहित्य लोकसंग्रह के कारण ही उपयोगी माना जाता है, यदि कोई रचना समाज के लिए उपयोगी नहीं है, तो वह साहित्य की श्रेणी में नहीं आ सकती, वैसे भी बिना उद्देश्य एवं उपयोगिता के रचा गया साहित्य मात्र कूड़ा कचरा है जो रद्दी के ढेर में विलीन हो जाता है, लेकिन उपयोगी साहित्य अमर बन जाता है, इसलिए साहित्य की कसौटी उपयोगिता ही है, मानव समाज के लिए साहित्य की उपयोगिता इसलिए भी है कि वह मानव की जिज्ञासा-वृति को शान्त करता है, ज्ञान की पिपासा को तृप्त करता है, मस्तिष्क का पोषण करता है।

जिस प्रकार पेट की भूख को शान्त करने के लिए भोजन आवश्यक है, उसी प्रकार मस्तिष्क की क्षुधा को मिटाने के लिए साहित्य आवश्यक एवं उपयोगी है। साहित्य के द्वारा मानव-चेतना का प्रसार होने से उसमें शिवत्व की स्थापना होती है। हम अपने सृष्टि राष्ट्रीय इतिहास से अपने देश की गरिमा अपनी सभ्यता एवं संस्कृति और अपने परम्परागत रीति-रिवाजों, आदर्शों एवं विचारों से परिचित होते हैं। हमें अपने

६-६-23

द्वितीय स्थान
सीनियर वर्ग
हिन्दी लेखन प्रतियोगिता

III

Date
Page

सुलेख प्रतियोगिता

द्वितीय चरण

नाम - गुन्जन कार्की
कक्षा - १० (अ)
अनु० - ०५
विषय - हिन्दी
सदन - नंदाकोट

K.M.S.B. Himalaya Inter College Chaukori, Pithoragarh PRINCIPAL

	मानक	पूर्णांक	प्राप्तांक
१	अक्षरों की बनावट	04	3
२	कार्यशैली व स्पष्टता	04	3
३	गति	04	3
४	शुद्धता	04	02
५	विराम चिन्हों का प्रयोग	04	3

कुल → 14

अ०ह० ..... 09/06/23

साहित्य का स्वरूप कैसा होना चाहिए, इस बात को लेकर पाश्चात्य एवं भारतीय आचार्यों ने काव्यशास्त्रीय दृष्टि से अनेक विचार व्यक्त किए हैं, स्थूल रूप से गद्य-पद्यात्मक समस्त रचनाओं को साहित्य के अन्तर्गत माना जाता है, इसके भी दो रूप होते हैं उपयोगी साहित्य और ललित साहित्य, उपयोगी साहित्य तो उक्त परिभाषा में सम्मिलित हो जाता है, परन्तु ललित साहित्य के लिए इतना जोड़ा जा सकता है की मनुष्य के अनुभवों और विचारों की भावात्मक अभिव्यक्ति साहित्य है, यह भावात्मक अभिव्यक्ति शब्दबद्ध होकर साहित्य को शक्ति प्रदान करती है, जिसके कारण एक व्यक्ति के अनुभव सार्वजनिक बन जाते हैं और सभी को प्रभावित करने में समर्थ रहते हैं, साहित्य रचना का उद्देश्य मानव समाज का हित-चिन्तन करना तथा उसकी चेतना का पोषण करना है,

इससे यह सिद्ध होता है कि साहित्य लोक-संग्रह के कारण ही उपयोगी माना जाता है, यदि कोई रचना समाज के लिए उपयोगी नहीं है, तो वह साहित्य की श्रेणी में नहीं आ सकती, वैसे भी बिना उद्देश्य एवं उपयोगिता के रचा गया साहित्य मात्र कूड़ा-कचरा है जो रद्दी से ढेर में विलीन हो जाता है, लेकिन उपयोगी साहित्य अमर बन जाता है, इसलिए साहित्य की कसौटी उपयोगिता ही है, मानव-समाज के लिए साहित्य की उपयोगिता इसलिए भी है कि वह मानव की जिज्ञासा-वृत्ति को शान्त करता है, ज्ञान की पिपासा को तृप्त करता है, मस्तिष्क का पोषण करता है।

जिस प्रकार पेट की भूख को शान्त करने के लिए भोजन आवश्यक है, उसी प्रकार मस्तिष्क की अक्षुधा को मिटाने के लिए साहित्य आवश्यक एवं उपयोगी है। साहित्य के द्वारा मानव चेतना का प्रसार होने से उसमें शिवत्व की स्थापना होती है, हम अपने राष्ट्रीय इतिहास से अपने देश की गरिमा, अपनी सभ्यता एवं संस्कृति और अपने पारम्परागत रीति-रिवाजों, आदर्शों एवं विचारों से परिचित होते हैं, हमें अपने साहित्य का अनुशीलन करने से पता चलता है की शताब्दियों पूर्व

I first Position in senior section - 1 min below

RANKA

ENGLISH WRITING Competetion

NAME - RAJ KUMAR
CLASS - 10 th C
HOUSE - PANCHACHULY

K.M.S.B. Himalaya Inter College, Chaukori, Pithoragarh
PRINCIPAL

- FORMATE LETTER - 3/04 OVER ALL - 3/04
- SPEED AND CLARITY - 3.5/04
- ACCURACY - 04/04
- PUNCTUATION - 04/04

TOTAL - 17.5/20

"Cure yesterday of my disease, I died last night of my doctor", says matthew prior, a fam-ous pharmacologist, while talking about the de-leterious effects of drugs in his book "The rem-edy worse than the disease". There is no shorta-ge of patients dying from the wrong treatment. Disorder destined to disappear in a short duration.

In this age of drugs we must become famili-ar with the term "Iatrogenic disease (illness caus-ed by a doctor)". When a doctor administers me-dication without a full understanding of the patients condition, the drugs wreak havoc. A person can become a victim of a worse disease or even lo-se his life.

With Analgin, for example, special precautions should be taken in case of pregnancy, bronchial asthma, kidney and liver dysfunctions and blood-related disorders. It has been banned in several countri-es, including the US and Sweden, due to its unex-pected and negative effects leadings to one even death from anaphylactic shock. Anaphylactic Sh-ock is a process that leads to a severe drop in blood pressure, bronchoconstriction, inflamm-ation of the blood and lymphatic vessels, and sometimes death due to fluid loss in these vessels. Anaphyloxis usually occurs suddenly, minutes afte-r the administration of a drug. The well known drug penicillin, and many other drugs, can cause anaphyloxis.

II Second Position in Senior Section

ENGLISH WRITING COMPETITION

PHASE - II

2023~2024

K.M.S.B. Himalaya Inter College, Chaubari, Pithoragarh
PRINCIPAL

NAME - GUNJAN - MEHTA
CLASS - 10th 'B'
ROLL NO - 05
SUBJECT - ENGLISH
HOUSE - NANDAKOT

S.No	CRITERIA	M.M	O.MARKS
1	Formation of letter	04	3
2	Speed and clearity	04	3.5
3	Accuracy	04	04
4	Punctuation	04	3
5	Working style	04	3
6	Overall	20	16.5

"Live yesterday of my disease, I died last night of my doctor" says Matthew Buon, a famous pharmacologist, while talking about the deleterious effects of drugs on his book "The remedy worse than the disease." There is no shortage of patients dying from the wrong treatment. Disorder destined to disappear in a short duration.

In this age of drugs we must become familiar with the term "iatrogenic disease (illness caused by a doctor)". When a doctor administers medication without a full understanding of the patient's condition, the drugs wreak havoc. A person can become a victim of a worse disease or even lose his life.

With Analgin, for example, special precautions should be taken in case of pregnancy, bronchial asthma, kidney and liver dysfunctions and blood-related disorders. It has been banned in several countries including the US and Sweden, due to his unexpected and negative effects leading to one even death from anaphylactic shock. Anaphylactic shock is a process that leads to a severe drop in blood pressure, bronchoconstriction, inflammation of the blood and lymphatic vessels, and sometimes death due to fluid loss in these vessels. Anaphylaxis usually occurs suddenly, minutes after the administration of a drug. The well-known drug penicillin, and many other drugs, can cause anaphylaxis.

The term "side effects" is part of the vocabulary of a sick layman, but adverse drug reactions are known only to a more conscientious and literate patient. Ciprofloxacin, when given for an ear infection, can cause vertigo and amoxicillin, while fighting a

III Third position in Senior section. 2 min before

Page No.: YOUVA
Date:

2nd PHASE 2023-24

WRITING COMPETITION

NAME- NIKITA PANT
CLASS- 10th A
DATE- 09/June/23
SECTION- A
HOUSE- OM

CRITERIA ~

1	FORMATION OF LETTERS	04	3
2	WORKING STYLE AND CLARITY	04	3
3	SPEED	04	3
4	ACCURACY	04	04
5	USES OF PUNTUATION MARKS	04	3

Total - 16/20

"Cure yesterday of my disease, I died last night of my doctor", says Matthew Prior, a famous pharmacologist, while talking about the deleterious effects of drugs in his book "The remedy worse than the disease." There is no shortage of patients dying from the wrong treatment. Disorder destined to disappear in a short duration.

In this age of drugs we must become familier with the term "iatrogenic disease (illness caused by a doctor)". When a doctor administers medication without a full understanding of the patient's condition, the drugs wreak havoc. A person can become a victim of a worse disease or even lose his life.

With Analgin, for example, special precautions should be taken in case of pregnancy, bronchial asthma, kidney and liver dysfunctions and blood-related disorders. It has been banned in several countries, including the US and Sweden, due to its unexpected and negative effects leading to one even death from anaphylactic shock. Anaphylactic shock is a process that leads to a severe drop in blood pressure, bronchoconstriction, inflammation of the blood and lymphatic vessels and sometimes death due to fluid loss in these vessels. Anaphylaxis usually occurs suddenly, minutes after the administration of a drug. The well-known drug penicillin, and many other drugs, can cause anaphylaxis.

The term "side effects" is part of the vocabulary of a sick layman, but adverse drug reactions are known only to a more conscientious and literate patient.

Ciprofloxacin, when given for an ear infection, can cause vertigo and amoxicillin, while fighting a throat infection, can damage the stomach. Similarly, while chemotherapy given for cancer can lead to indigestion and hair loss, steriods given continuosly can lead to obesity and diabetes.

Drugs are intended to eliminate the disease. In the quest to avoid the misery of disease, man has invented medicines that can themselves cause disease. Illness caused by a drug can be short-term or long-term. Side effects are short-term and predictable. Unpredictable and unusual reaction-s are called adverse reactions. A variety of medications cure many diseases, but they have also been known to cause irregular heartbeats and even sudden death.

A strong sense of responsibility on the part of the physician and an attitude of extreme caution on the part of the patient can substantially help to cover at least some, if not all, of the risks of medications. There are many factors that help a doctor in his choice and use of the drug. A patient's medical history, age, gender, personality, environment, and education all help decide the course of treatment. The very old and the very young are likely to suffer because their bodies are less tolerant. Older children can sometimes be more tolerant than adults. The elderly tend to respond better to standard doses of medications. But smaller body size, slow blood flow to vital organs, decreased metabolic capacity, and a tendency to multiple physical problems all contribute to adverse reactions.

...Finished...